Sahitya Manthan
A Peer-Reviewed, Open Access e-journal
ISSN: 2582 6867, Website: http://www.sahityamanthan.in
Year-2, Issue-8, Continuous Issue-14, July-August 2022

1857 संग्राम में गुजरात के आदिवासी नेता रूपसिंह नायक का योगदान

भारत में जब यूरोपीय प्रजा का आगमन हुआ और, ब्रिटिश शासन की शुरुआत हुई। तभी भारत में राष्ट्रवाद का उद्भव हुआ। भारत में 1857 की जो घटना घटी इसे भारत में राष्ट्रवाद के उदय का प्रथम चरण हम कह सकते है। भारत में अंग्रेजों ने सत्ता हासिल करने के लिए कूटनीति का सहारा लिया इसे भारत में अंग्रेजों के खिलाफ असंतोष पैदा हुआ, येही 18157 संग्राम का मुख्य कारण है। अंग्रेजों ने भारत के लोगों में समाज सुधारणा की आड़ मे भय पैदा कीया और ख्रिस्ती धर्म का अंगीकार करवाके, भारतीय संस्कृति और धर्म का नाश करना चाहते हैं। ये प्रचार हुआ उस समय भारतीय समाज रूढ़ि चुस्त था। और नए परिवर्तन से नाखूस था। इन परिणाम से कई व्यक्तियों को अपने सामाजिक-धार्मिक आस्था को टीकाने के लिए संग्राम में भाग लेनेको मजबूर होना पड़ा ।

ब्रिटिशरों की आर्थिक नीति इंग्लैंड को समृद्ध बनाने की थी। इसीलिए भारतीय लोग आर्थिक रूप से पायमाल हुए। इसी कारण ज़मींदार, व्यापारी, खेडूत ने संग्राम में भाग लिया। अंग्रेजों की विस्तारवादी नीति के कारण भारत के ज्यादातर प्रदेशों में ब्रिटीस सत्ता की स्थापना हुई। कई राजाओं ने इसका विरोध किया। इसमें झांसी की रानी लक्ष्मीबाई, बिहार के जागीरदार राजा कुंवरसिंह जैसे अनेक राजाओं ने ये संग्राम मे नेतृत्व किया। भारत में अंग्रेज़ी सिपाही और अधिकारी की तनख्वाह भारतीय से ज्यादा थी और उनकी तुलनामे भारतीय सिपाही और अधिकारी की तनख्वाह कम थी। ये फ़र्क बहुत बड़ा था भारतीय सिपाही तुच्छ माने जाते थे। इसीलिए सिपाही को लगता था कि वो भी भारतीय समाज का एक अंग ही है। इसीलिए प्रजा का दुख ही अपना दुख समझ कर सिपाहियों पर भी संग्राम का असर पडा। और सिपाही भी संग्राम के समर्थन में आ गए। उसी समय भारतीय सेना में 'एनफील्ड' राइफल दाखिल की गई । इस राइफल के कारतूस की बनावट में गाय और सूअर की चर्बी का उपयोग होता था। और ये कारतूस अपने दांतों से तोड़नी पड़ती थी, इसी कारण हिन्दू और मुसलमान सिपाहियों में असंतोष फैल गया। सबसे पहले मंगल पाण्डेय ने विरोध किया, इस घटना के बाद 1857 का संग्राम तय समय से पहले ही शुरू होगया। इसीलिए आन्दोलन सफल नहीं हो पाया।

ईसवी सन 1857में 31 तारीख के में महीने में ब्रिटिश शासन के ख़िलाफ़ जो संग्राम का आयोजन किया था। उनमें नाना साहब पेशवा, बहादुर शाह जफर, कुंवर सिंह और अवध नवाब शामिल थे। तात्या तोपे, रंगो बापूजी और अजीमुल्ला खान भी जुड़े थे। गुजरात में 18157 के समय ब्रिटिश शासन के सामने पहली बार राजकीय क्रांति हुई गुजरात में गायकवाड़ शासन और दूसरे राजाओ अंग्रेजों के साथ वफादार बने रहे। फिर भी लोगों में विरोध प्रगट हुआ। अहमदाबाद, सूरत, बड़ौदा, भरूच जैसे शहरों में विरोध हुआ। दाहोद में क्रान्तिकारियों ने 7 दिन तक शासन का दोर अपने हाथों में ले लिया आनंद के मुखी गड़बड़ दास ने अंग्रेजों का विरोध किया राजपीपला के सैयद मुराद अली, लूणावाड़ा के सूरजमल, रोहाना ठाकुर ये सब लोगों ने हथियार उठाए और विरोध किया। 1848 के सितम्बर में तात्या तोपे पंचमहाल आए थे परन्तु गुजरात में क्रान्ति को ज्यादा गति देने से पहले ही देश भर में क्रान्ति को कुचल दिया गया।

गुजरात में राष्ट्रीय आन्दोलन की घटना में नेतृत्व का अभाव दिखाई देता है। इसीलिए ही स्वतन्त्रता संग्राम में गुज़रात की भूमिका कम दिखाई देती है। गुजरात की सामान्य प्रजा ने अलग अलग प्रदेश से ब्रिटिश शासन को उखाड़ने का प्रयास किया। उनमें सामंत, राजा, नवाबों और उच्च वर्ग के लोग नहीं थे। मगर भील, आदिवासी, ठाकर, वागेर, कोरी पटेल, वाणियाँ, राजपूत, ब्राह्मण थे। गुजरात में ये क्रान्ति खास करके निम्न वर्गों के लोगों ने की, ये नेतागिरी की इसी घटना के बाद 10 साल तक आज़ादी के लिए जो संघर्ष चलता रहा,

उनमें जिन नेताओं ने महत्त्व की भूमिका अदा की उनमें दिलदारखान, रूपसिंह नायक, ठाकोर सूरजमल, सैयद मुराद अली, जीवाभाई, गरबड़दास मौलवी लियाकत अली, मगनलाल वाणियों, जमादार मुस्तफा खान, नाथाजी जेसे अनेक नायको ने भाग लिया इनमे रूपसिंह नायक का प्रदान भी बहुत बड़ा है।

गुजरात मे सबसे पहेले ब्रिटीश शासन के खिलाफ विरोध करने वाली प्रजा आदिवासी ही थी। उनके पीछे पीछे बहोत सारे कारण है। जैसे कि रूपसिंह नायक के नारुकोट संस्थान की झिंझरी गाँव की जागीर को छीन लिया था। और रूप सिंह के पिता का खून कर दिया था। इनमें छोटाउदेपुर और देवगढ़बारिया राज्य समान रूप से दोषित थे। और नायकाओं के विरूद्ध देशी राज्यों को ब्रिटिश सरकार प्रोत्साहित करती थी। और नायकाओं को जबरदस्ती काम करवाया जाता था। इसी कारण से नायकाओने विरोध किया। संग्राम के समय आदिवासी समूह की नेतागिरी लेने वाले जमींदार और जागीरदार भी थे। आदिवासियों ने सत्ता के सामने सशस्त्र भी उठाए थे। रूपसिंह नायक पंचमहल के आदिवासी जातियों में पछात जाति का नेता था। नायक जाति पंचमहाल के नरुकोट, देवगढ़बारिया, हलोल और गोधरा में बसने वाली प्रजा है। ये प्रजा ने 1838 से 1868 तक समय समय पर नायकाओं ने नेतृत्व करके लडाई लड़ी इनमे से रूपसिंह नायक की प्रवृत्ति उल्लेखनीय है। उनके पास जातिगत बहारवटिया प्रवृत्ति का अनुभव था। उनके संगठन से देशी राज्यों में भी घबराहट थी। ऐसी जानकारी हमें मिलती है। जिसमें रूपसिंह नायक कि आगेवानी का प्रभुत्व था। आज भी रूपसिंह नायक नायकाओ का राजा बन के जीवित है। रूपसिंह का जन्म जंबूघोड़ा राज्य के 'दांडियापूरा' गांव में हुआ था। पिता का नाम गोबर नायब था। वे झिंझरी गांव पर वारसाई का हक रखते थे, मगर लोकवाइका के अनुसार रूपसिंह नायक को जंबूघोड़ा के राजा के नाम से ही प्रस्तुत करते हैं। रूपसिंह नायक को 'चोंटलिया' देव की कृपा थी। इसीलिए इनमें चमत्कारिक शक्ति थी 'चोटोंलिया' देव ने रूपसिंह नायक को एक चमत्कारिक लकड़ी और बंदूक दी थी। रूपसिंह नायक की लड़ाई ब्रिटिश सरकार के सामने नहीं थी। परन्तु देसी रजवाड़ा ओ के सामने थी। रूपसिंह ने 1838 में लड़ने की शुरुआत की और 1857 के विप्लव की अशांति का पूरा लाभ लिया। रूपसिंह नायक के नेतृत्वमे रूपनाथ और केवल नायक ने ब्रिटिशरों के सामने हथियार उठाए थे। नरुकोट थाने में लूटपाट करके रेजीमेंट कैप्टन बेसमेंट की टुकड़ी पर जाबुघोडा के पास हमला किया। नायकाओं ने चांपानेर नारूकोट के विस्तार में अपना हक मज़बूत बनाया था। गोधरा के उत्तर भाग तक रूप सिंह के नेतृत्व में जो विद्रोह हुआ उसे दबाने के लिए पॉलिटिकल एजेंट ने 1868 में कर्नल वॉलेस को भेजा फिर भी नायकाओं और मकराणी की संयुक्त टोली ने साथ मिलकर एक सूबेदार सहित 7 को मार डाला और 11 को घायल किया। आखिर में कैप्टन रिचर्ड वार्नर के सामने रूपसिंह हार जाता है। और शरण में आता है। रूपसिंह ने सामान्य माफी और शस्त्रों को छोड़कर हा र स्वीकार कर लेते है।

रूपसिंह नायक की लड़त को विप्लवकारियों के साथ जुड़ी हुई थी,मगर रूपसिंह नायक को 1857 के विप्लवकारियों के साथ कोई फ़ायदा नहीं था। रूपसिंह की लड़त नारूकोट के सामने ही थी। रूपसिंहने 1857 के समय क़ायदा व्यवस्था का लाभ उठाने का प्रयत्न किया था। उनकी लड़त देसी रजवाड़ों के साथ थी। अंग्रेज सत्ता के साथ नहीं थी। इसीलिए ब्रिटिश सरकार ने रूपसिंह को माफी दी थी।

रूपसिंह नायक ने अपने व्यक्तिगत कारणों से बहारवटिया की शुरुआत की थी। नायकाओं का सहकार भी मिला मगर अंत में कुछ हासिल नहीं हुआ। बल्कि उनकी लड़ाई नायिका ज़ाती के लिए घातक पुरवार हुई ये लम्बी लड़ाई के कारण ब्रिटिश शासन ने नायकाओं के सामने कठोरता दिखाई। 1868 में रूपसिंह का साथ देने वाले जंबूघोड़ा राज्य के 'डांडियापूरा' और 'वड़क' गांव के थे। इसीलिए ये गाँव वालों को वहां से खदेड़ दिया गया। आज हम रूपसिंह नायक की लड़ाई को कम नहीं कह सकते है। आज भी रूपसिंह नायक ओर ब्रिटीशरों की लड़ाई से जुड़ी हुई कथायें, और गीत सुनने को मिलते हैं। ये ही नायकाओं का गौरव का इतिहास मिलता है।

सन्दर्भ सूची

1 ‘गुजरात का सांस्कृतिक दर्शन’ कुंजबिहारी मेहता

2 ‘1857 क्रान्ति में गुजरात’ आशुतोष भट्ट

3 ‘इतिहास अन्वेषणा’ अरूण वाघेला

4 ‘विसरायला शहीदो’ अरुण वाघेला

5 ‘ब्रिटिशरों सामे खूंखार जंग खेल नारा नायको’ किशोर जानी संपादक भावसिंह राठवा

प्रस्तुतकर्ता

डॉ. मनीष पटेल

संपर्क: 9428578401

ईमेल : mm1211manish@gmail.com

सहायक अध्यापक

डिपार्ट्मन्ट ऑफ कम्पैरटिव लिटरेचर

वीर नर्मद साउथ गुजरात यूनिवर्सिटी सूरत, गुजरात